उत्पत्ति २७: आशीष

- **“यदि कोई ऐसा विषय है जिसमें हमें अत्यन्त सावधान रहना चाहिए, तो वह है ‘परमेश्वर की परीक्षा लेना’..... जहाँ परमेश्वर ने अपना निर्णय कर लिया हो, वहाँ कभी संदेह न करें, न पीछे हटें।”**

- इसहाक ने अपने पुत्रों के विषय में परमेश्वर के पहले से किए गए निर्णय से **भिन्न** निर्णय लेना चाहा।

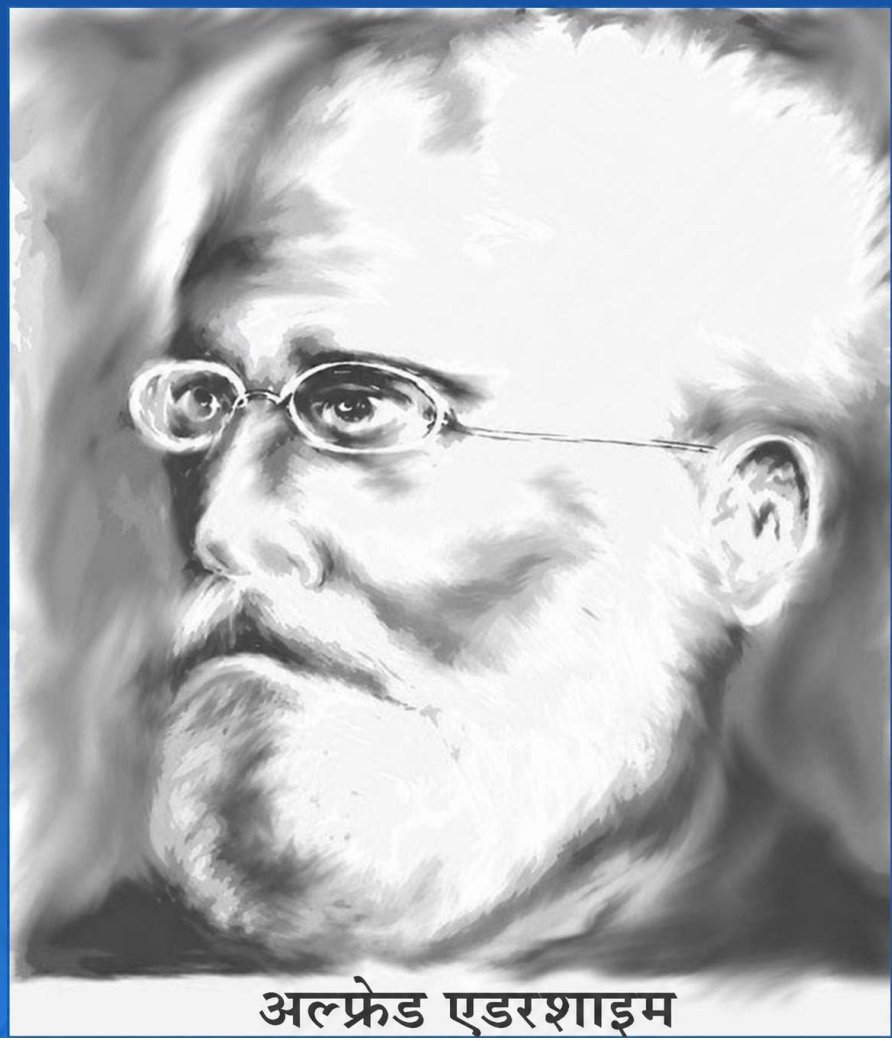

इस दृश्य में ज्येष्ठाधिकार वास्तविक मुद्दा नहीं है

- **बेकोर** (ज्येष्ठ पुत्र) कौन होगा, यह विषय **पहले ही** निपट चुका था।
- **उत्पत्ति २७:३६** "...क्योंकि उसने मुझे दो बार पीछे ढकेल दिया है? उसने मेरा ज्येष्ठाधिकार ले लिया.....अब उसने मेरी आशीष भी ले ली।"
- **आशीष** और **ज्येष्ठाधिकार** आवश्यक रूप से एक-दूसरे से जुड़े हुए नहीं हैं।
- **ज्येष्ठाधिकार** वारिस के **जन्म** के समय ही स्थापित हो जाता था।

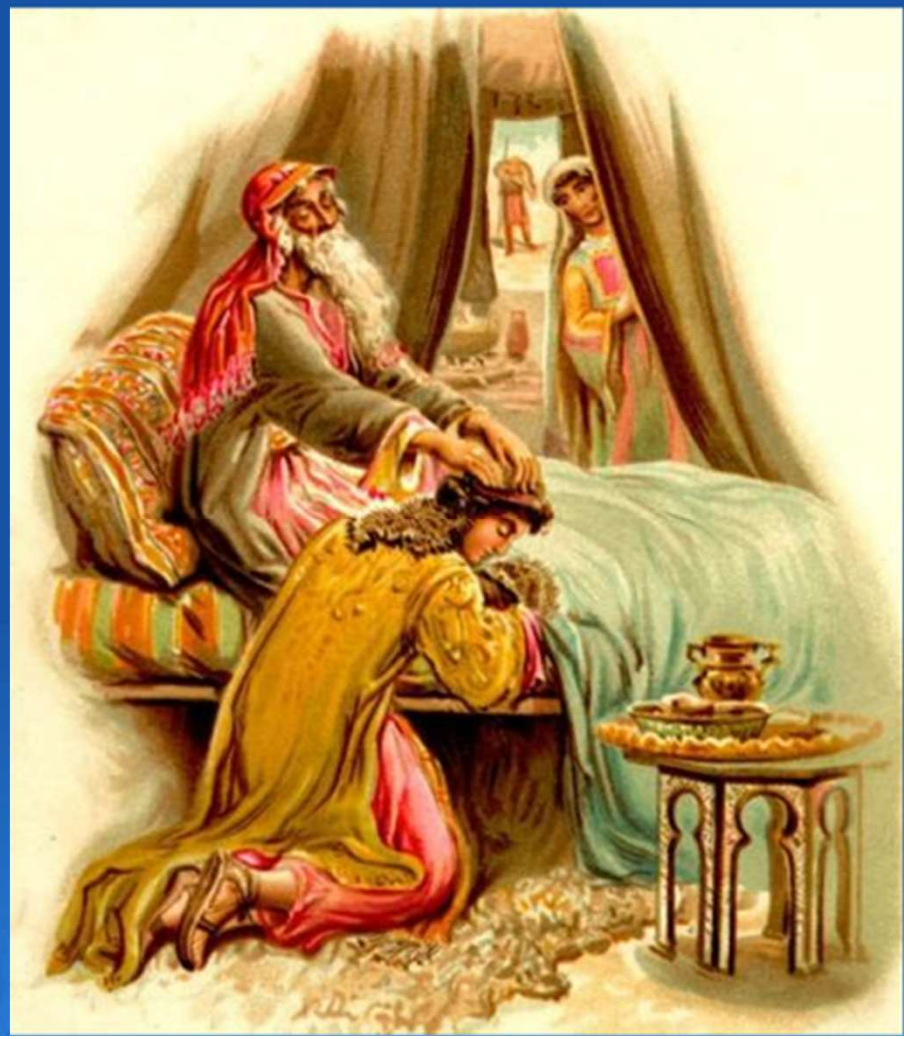

आशीष और ज्येष्ठाधिकार पृथक्-पृथक् विषय हैं

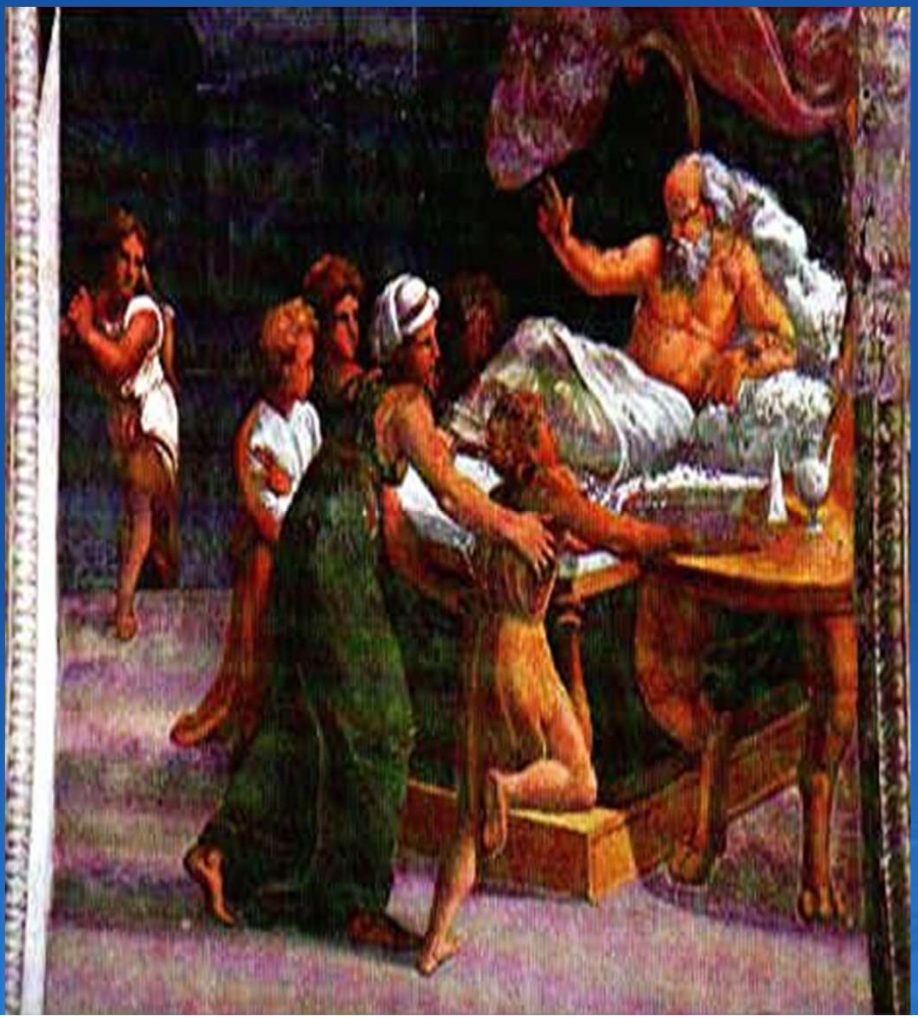

- सामान्यतः, **ज्येष्ठाधिकार** वर्तमान कुल-प्रधान के जीवन के अन्त के समीप **निश्चित नहीं किया जाता था।**
- **ज्येष्ठ पुत्र** को **सब कुछ प्राप्त नहीं होता था।**
- **दुगुना भाग** का अर्थ ठीक दुगुना भी हो सकता था, परन्तु उसमें **बहुत बड़ी छूट** थी।
- इस अध्याय में जो विषय है, वह **सम्पत्ति के बँटवारे** के विषय में है।

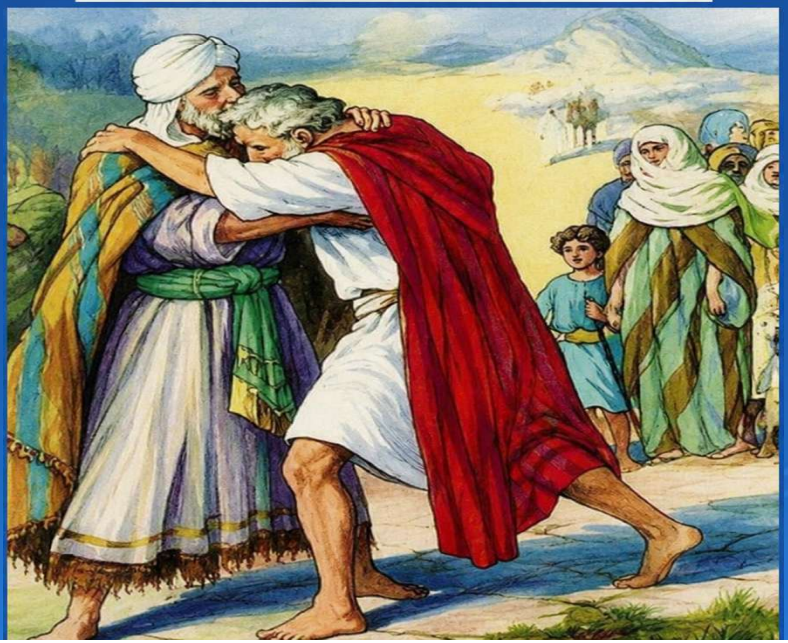

इसहाक एक सौ सैंतीस वर्ष का हो चुका है!

- **एसाव और याकूब बच्चे नहीं थे!**
- वे **सत्तर-सात वर्ष** के आस-पास के थे।
- **रिबका** ने परमेश्वर की सहायता करने का निश्चय किया, **छल** के द्वारा।
- **क्या अन्त साधन को उचित ठहराता है?**

याकूब इसहाक को धोखा देता है

- **बेराख़ाह = आशीष**
- **सोचते हुए** कि यह एसाव है, **इसहाक याकूब को आशीष देता है।**
- यह **ज्येष्ठाधिकारी** होने के विषय में **नहीं था।**
- यह **इस बात के विषय में था** कि इसहाक एसाव को वे अधिकार और देना चाहता था, **जो वास्तव में याकूब के ही थे।**

काम पूरा हो चुका है

- **याकूब** के मन में **न तो आनन्द** था **और न ही दीनता**।
- **याकूब का छल** पाप था।
- **एसाव** शिकार से लौटा, और यह जानकर कि **उसके साथ धोखा हुआ है**।
- **एसाव** दो बातें कहता है कि उससे **दो वस्तुएँ** ले ली गई हैं:
  १) **ज्येष्ठाधिकार**,
  २) **आशीष**।
- **एसाव** ज्येष्ठाधिकारी बनना नहीं चाहता था, वह तो बस **सामान** चाहता था!

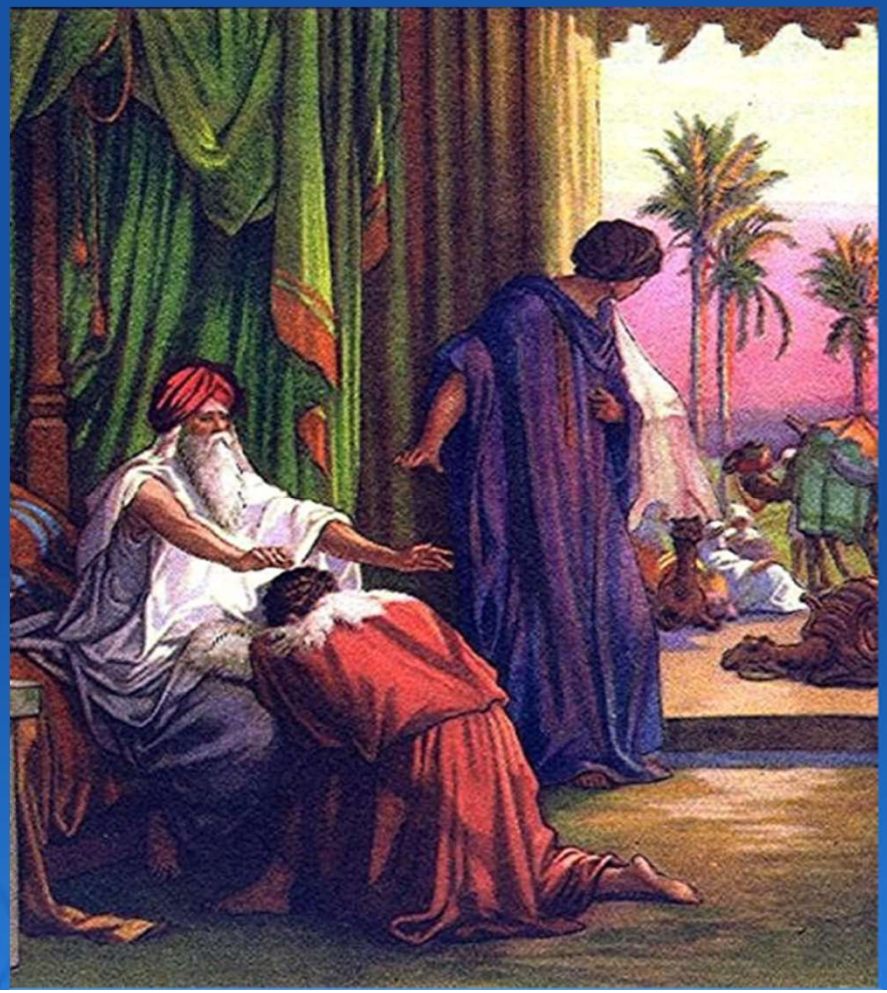

इसहाक एसाव को आशीष देता है

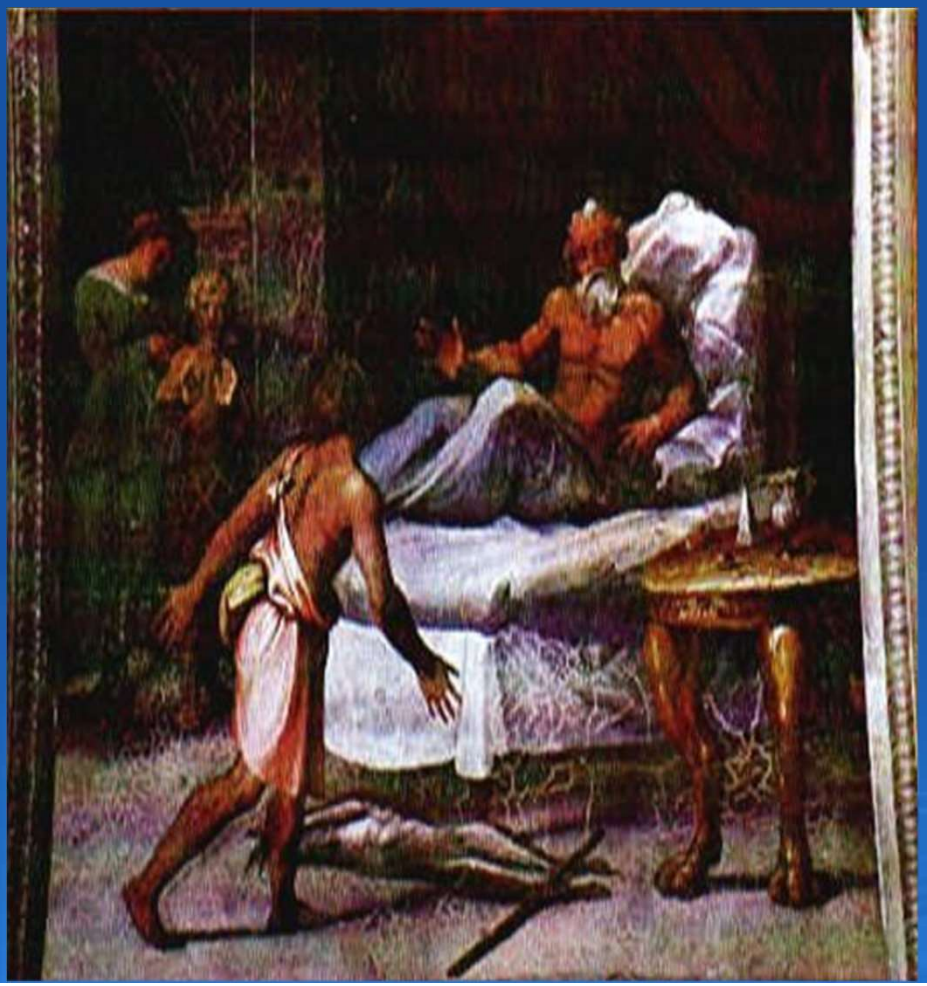

- **इसहाक** एसाव के लिए **जो कुछ कर सकता था**, उसमें **सीमित** था।
- **आशीषें** वापस नहीं ली जा सकतीं (अपरिवर्तनीय हैं)।
- **उपाय ३९** (परम्परागत अनुवाद): **"तेरा घर भूमि की उपज से भरपूर होगा और आकाश की ओस से भी।"**
- **शाब्दिक अर्थ: "देख, भूमि की उपज से दूर और आकाश की ओस से दूर तेरा निवास होगा।"**

एदोम का 'आशीर्वाद' वास्तव में एक 'अभिशाप' था

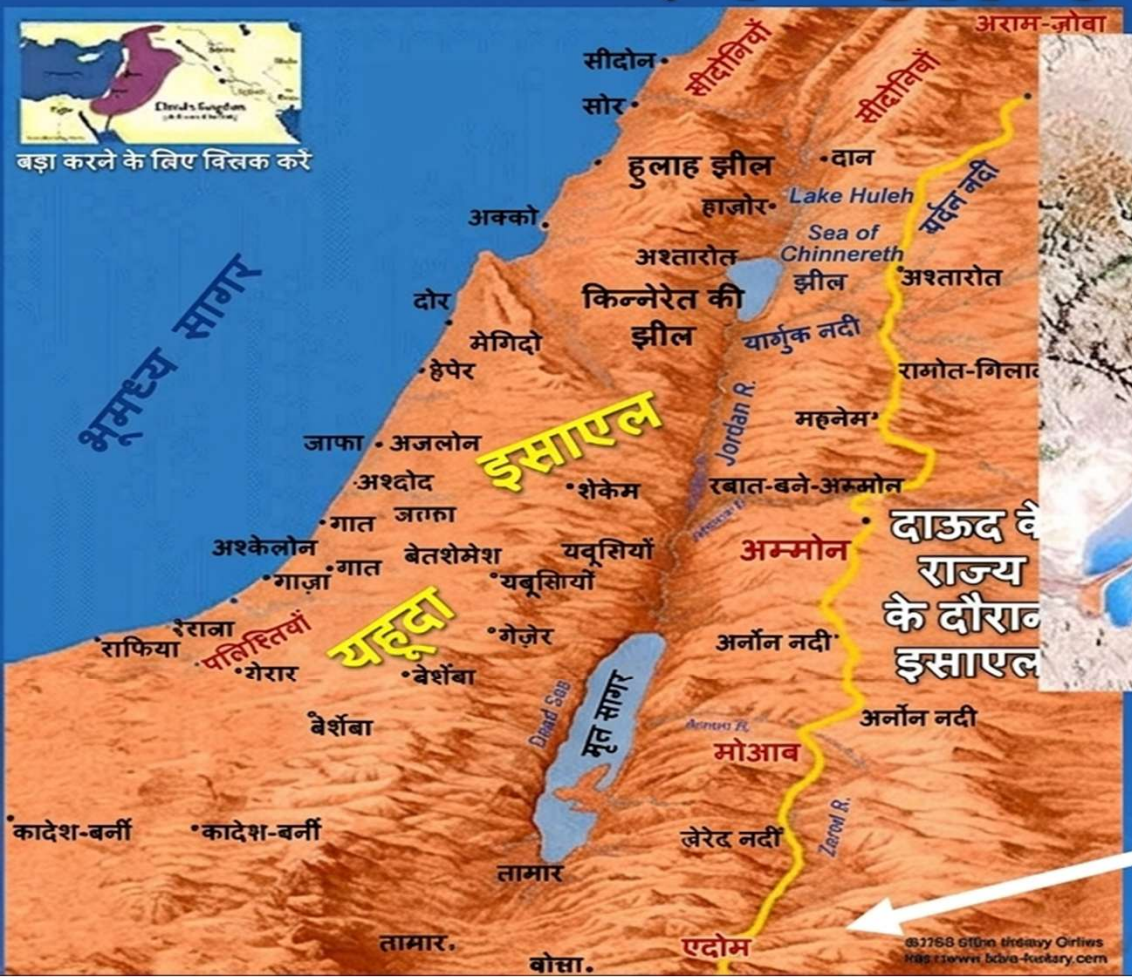

एदोम

राशी ग्यारहवीं शताब्दी ईस्वी

- **राशी** ने **धर्मयुद्धों** (क्रुसेड्स) को अपनी आँखों से देखा।
- उन्होंने **एसाव** को एक **प्रतीक** के रूप में देखा।
- उन्होंने **एसाव** को **काथलिक गिरजाघर** और **रोम** के साथ समानता दी।
- **राशी** का आधुनिक यहूदी धर्म के विचारों से बहुत गहरा सम्बन्ध है।
- **राशी** को **एसाव** की दयनीय दशा पर **सहानुभूति** थी, **तथापि**...
- वे यह भी जानते थे कि **एसाव** का भाग्य **इस्राएल** का शत्रु बनना था।

एदोम के क्षेत्र में कभी तेल नहीं था!!

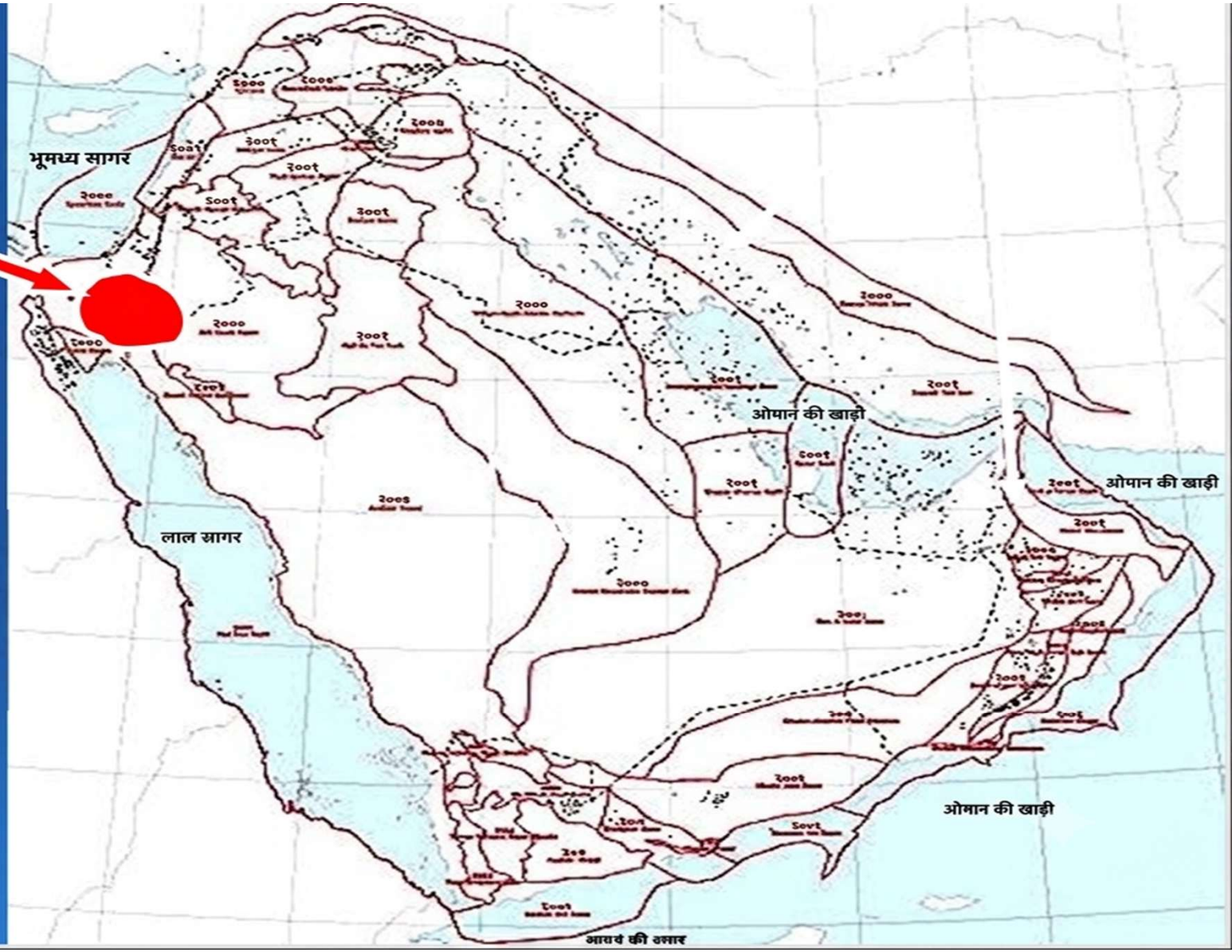

चरबी "तेल" के लिए दूसरा शब्द नहीं है

यदि एसाव को सच्ची आशीष मिली होती, तो वह याकूब को मार डालना नहीं चाहता!

- **एसाव = एदोम**
- **राजा हेरोदेस** “इदुमिया” का था।
- **इदुमिया** यूनानी भाषा में **एदोम** है।
- **एसाव** इश्माएल की सन्तान के साथ मिल गया।
- **अरब संसार** का बहुत बड़ा भाग **एसाव** की वंशावली को धारण करता है।
- **ओटोमन तुर्क**, **सीरियाई**, **इराक के कुर्द**।
- **तुर्की** अन्तिम समयों में **बड़ा महत्वपूर्ण भूमिका** निभाएगा।
- **बहुसंख्यक मुस्लिम एसाव** से सम्बन्ध रखते हैं।

याकूब को मेसोपोटामिया के हारान में उसकी माँ के परिवार के पास भेजा गया है

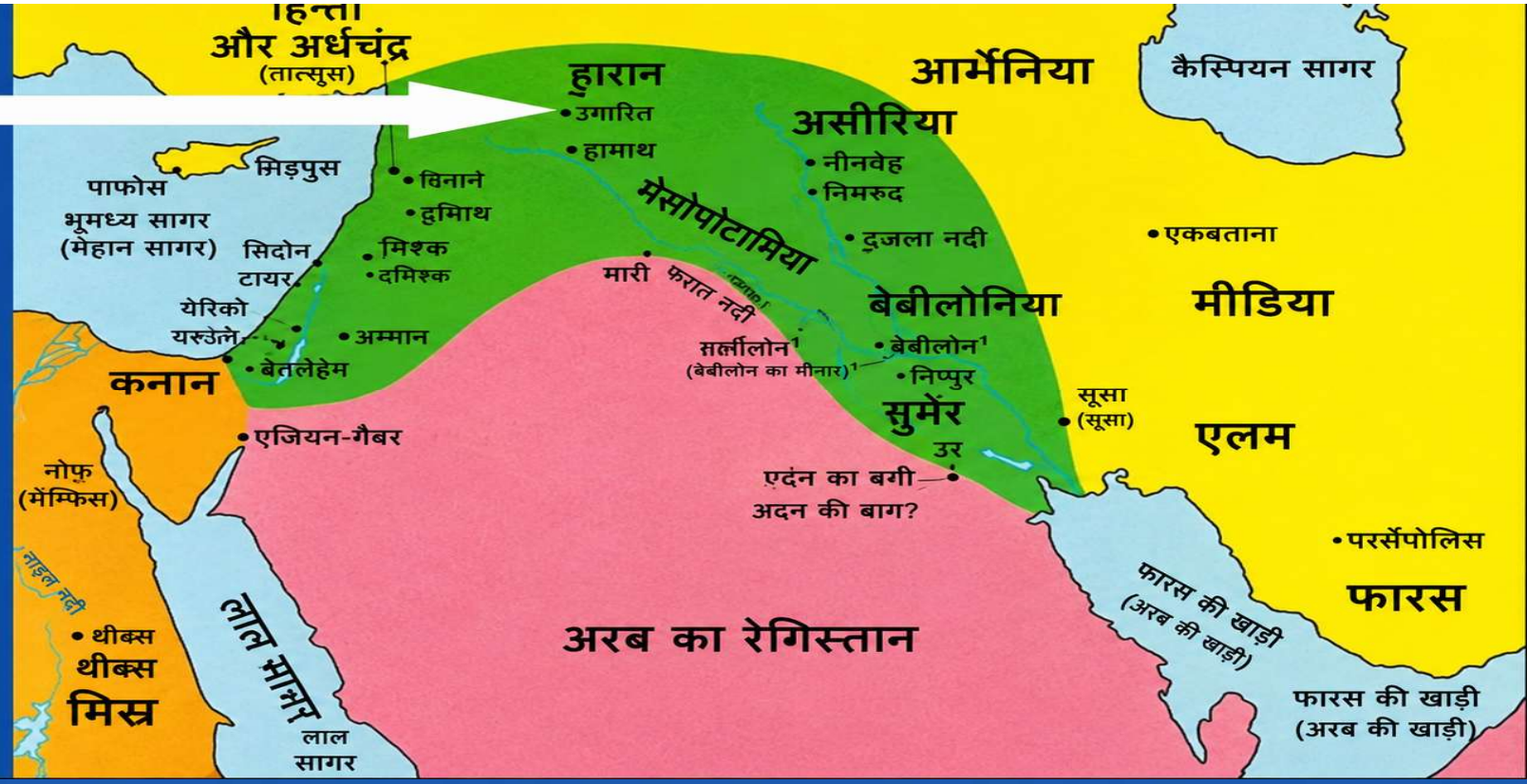

- **राजा दाऊद एसाव** की सन्तान पर शासन करने वाला **प्रथम इस्राएली** था। **१००० ई.पू. से ७३५ ई.पू.** तक।
- **रिबका** ने **इसहाक** के कनानी स्त्रियों के प्रति घृणा का उपयोग करते हुए, उसे **याकूब** को दूर भेजने के लिये राज़ी किया।